भारत-चीन संबंध (India-China Relations)

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

पश्चिमी साम्राज्य के उदय से पूर्व भारत और चीन एशिया का महाशक्ति था। दोनों देशों का अपने अपने क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव था। भारत 1947 और चीन 1949 में साम्राज्यवादी शासन से मुक्त हुआ। जहाँ भारत लोकतांत्रिक बना वहीं चीन का स्वरूप लोकतंत्र के मामले में नाममात्र। चीन और भारत दो परस्पर बड़े पड़ोसी देश हैं। वहीं अमेरिका और सोवियत रूस में द्वन्द्व युद्ध (शीत युद्ध) का दौर शुरु था भारत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में गुटनिरपेक्षता की नीति अपनायी तब अमेरिका नाराज हो गया। अमेरिका सोचा कि भारत में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की छवि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहनीय है। लेकिन आशा पर पानी फिर गया। भारत हर संभव तरीकों से अपने पड़ोसियों के साथ संबंध सुधारना चाहा। चीन साम्यवादी देश बना। जो अमेरिका के लिए ठीक नहीं लगा, इससे अमेरिका सदमा में पड़ गया। भारत ने चीन को पड़ोसी की तरह देखते हुए संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता दिलानी चाही लेकिन अमेरिकी विरोध के चलते चीन 1970 तक संयुक्त राष्ट्र का सदस्य नहीं बन पाया। लेकिन प्रयास जारी रहा भारत के सहयोग से चीन संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बन गया। चीनी प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई तथा भारतीय प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के बीच बाण्डुंग सम्मेलन में दोनों देशों ने एक दूसरे का सहयोग करते हुए 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का नारा लगाया। भारत ही ऐसा पहला गैर साम्यवादी देश था, जिसने चीन को राजनैतिक मान्यता प्रदान की। लेकिन भारत-चीन की दोस्ती ज्यादा दिन नहीं चल पाई सीमा विवाद एवं तिब्बत समस्या के कारण दोनों के बीच दुश्मनी हो गई। तिब्बत में चीनी प्रशासन के दमन का समर्थन भारत सरकार नहीं कर सकी यही मुख्य कारण था। 1956 में तिब्बत के खम्पा क्षेत्र में हुए विद्रोह को दलाई लामा का समर्थन मिल रहा था। यह विद्रोह सफल न हो सका और चीनी प्रशासन ने इसे बुरी तरह कुचल दिया। इसके बाद जब 31 मार्च 1959 को दलाई लामा ने भारत में शरण ली, तो चीनी सरकार ने इस पर अपना रोष प्रकट किया। इसके साथ ही साथ भारत और चीन के साथ दुश्मनी और तेज हो गया।

दलाई लामा को शरण देने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को अपमानित करने के दृष्टिकोण से 20 oct, 1962 को भारत के उत्तर-पूर्वी सीमान्त क्षेत्र लद्दाख की सीमा पर आक्रमण कर चीन ने जम्मू कश्मीर के कुछ क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। दलाई लामा को शरण देने का कारण तो एक मात्र बहाना था, चीन के इस आक्रमण के द्वारा अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहता था तथा भारत को कमजोर साबित करना चाहता था। चीन के इस आक्रमण से जवाहर लाल नेहरू को बड़ा

आघात पहुँचा और अन्ततः 1964 में उनकी मृत्यु हो गई। चीन का शत्रुतापूर्ण रवैया भी समाप्त नहीं हुआ। 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्धों में उसने परोक्ष रूप से पाकिस्तान का साथ देकर अपने इरादे को जाहिर किए।

1988 में प्रधानमंत्री राजीव गाँधी का दौरा एवं 1993 में प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव का दौरा द्वारा सीमा विवाद सुलझाने तथा आर्थिक सहयोग को परस्पर बढ़ाने की दिशा में ठोस पहल की। 2003 में भारत ने तिब्बत पर चीनी दावे को स्वीकार कर लिया। 2005 में चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ ने भारत यात्रा की तथा सिक्किम पर अपनी दावेदारी को नकारा। नवम्बर 2006 में चीनी राष्ट्रपति हू जिन्ताओ की भारत यात्रा के दौरान भी दोनों देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक सम्बन्ध मजबूत बनाने तथा सीमा विवाद सुलझाने जैसे अहम मुद्दे पर सार्थक बातचीत हुई।

सबसे बड़ी समस्या - भारत और चीन की दो स्तरों के बीच सीमा विवाद रहा है। चीन की इच्छा है कि भारत दलाई लामा को तिब्बत भेजे। लेकिन राजीव गाँधी की चीन यात्रा के अवसर पर भारत और चीन के बीच सीधी टेलीफोन की व्यवस्था स्थापित हो गई और आज ये भारत के 500 शहर सम्बन्धित हुए।

हालाँकि चीन का रवैया भारत के प्रति कभी भी सकारात्मक नहीं रहा है। जब से भारत ने अमेरिका के साथ असैन्य परमाणु समझौता किया, तब से चीन की बेचैनी और बढ़ गयी है। चीन दक्षिण एशिया में भारतीय प्रभाव को कम करने के दृष्टिकोण से पाकिस्तान के साथ सैन्य साझेदारी को नए आयामों तक पहुँचाने के साथ-साथ भारत के बाकी पड़ोसियों - श्रीलंका, बंगलादेश, म्यांमार और नेपाल के साथ भी सैन्य सहयोग बढ़ा रहा है। चीन ने जम्मू कश्मीर के भारतीय पासपोर्ट धारकों को अलग से वीजा जारी कर सीमा विवाद को और बढ़ाने का कार्य किया है। इसके साथ ही साथ चीन ने कश्मीर को एक अलग देश के रूप में दिखलाना शुरू किया है। कई बार चीन ने सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश को अपना हिस्सा कहने की गलती की है। भारतीय चिंताओं को नजरअंदाज करते हुए चीन ब्रह्मपुत्र नदी के प्रवाह को मोड़ने की परियोजना पर काम कर रहा है। इस तरह चीन की गतिविधियाँ भारत के सामरिक तथा प्रतिरक्षा हितों के अनुकूल नहीं कही जा सकती। भारत को सामरिक मोर्चे पर चारों तरफ से घेरने की तैयारी चीन काफी पहले से कर रहा है। वह भारत से जुड़ी तिब्बत की सीमा पर चौड़ी लेन वाली सड़कों का जाल बिछा रहा है, जिसका दुरुपयोग वह सैन्य गतिविधियों के लिए कर सकता है।

वर्ष 2008 में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी राजीव गाँधी के नक्शे कदम पर चलते हुए दोनों देशों के बीच सम्बन्ध सुधारने की कोशिश की। जिसके फलस्वरूप दोनों के मध्य व्यापार, विज्ञान एवं तकनीकि आदि क्षेत्रों में अब तक अनेक समझौते हो चुके हैं और दोनों की आर्थिक भागीदारी में वृद्धि हुई है। दोनों देशों के प्रधानमंत्री कार्यालयों के बीच सीधी हॉटलाइन सेवा की

शुरुआत 2010 में हुई। इससे दोनों देशों के प्रधानमंत्री किसी भी समय एक दूसरे के साथ सीधे सम्पर्क कर सकते हैं। अप्रैल 2010 में बीजिंग में हुए दोनों देशों के प्रतिनिधि मण्डल स्तर की वार्ता में विदेश मंत्री एस-एम-कृष्णा के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल ने पाक अधिकृत कश्मीर में चीन द्वारा कराए जा रहे कार्यों एवं जम्मू कश्मीर के निवासियों के पासपोर्ट पर नत्थी वीजा जारी करने के चीन के रवैये पर कड़ी आपत्ति दर्ज की। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भागीदारी हेतु प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने 14 अप्रैल 2011 को चीन की यात्रा की। ब्रिक्स का चौथा शिखर सम्मेलन 29 मार्च 2012 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ, जिसमें चीन के राष्ट्रपति हू जिंताओ ने भी भाग लिया। चीन के नए प्रधानमंत्री ली केकियांग ने 19 मई 2013 को भारत की यात्रा की और दोनों देशों के बीच विपक्षीय संबंधों में सुधार पर बल देते हुए स्पष्ट किया कि उनकी भारत यात्रा का मकसद विश्व को यह दिखाना है कि चीन और भारत के बीच आपस में विश्वास बढ़ रहा है।

भारत और चीन ने वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सेना के बीच टकराव और तनाव को टालने के लिए 23 oct 2013 को एक ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किये। सोचने की बात यह है कि चीन का भू भाग, भारत के भू-भाग से ऊँचा है। चीन की सीमा पहाड़ों पर चढ़कर मोर्चा लेता है जबकि भारत की सेना निचले इलाकों से मोर्चा संभालता है। इसके अलावा तिब्बत में रेलवे लाइनें, हाइवे और हवाई अड्डे बनाकर चीन इस स्थिति में आ गया है कि भारत पर संभावित हमले के लिए कोई भी समय चुनकर वहाँ तेजी के साथ सेना और रसद (सामग्री) पहुँचा सकता है। यह भी स्पष्ट है कि 15 April 2013 को चीनी सेना ने भारतीय क्षेत्र में 18 K.M अंदर घुसकर तंबू डाल दिया। इससे दोनों देशों में काफी तनाव बढ़ा। चीनी प्रधानमंत्री के भारत दौरे के पूर्व चीनी सैनिकों ने अपने तंबू हटा लिये।

18 जून 2017 को भारत और चीन के बीच एक नए विवाद की शुरुआत हुई। यह यह 'डोकलाम विवाद' के नाम से जाना जाता। तीन महीने चले विवाद के बाद दोनों देशों की सेनाओं को वापस बुला ली गई। इसके बावजूद 'वन बेल्ट वन रोड' तथा 'चीन-पाकिस्तान आर्थिक कॉरिडोर', अक्साई चीन मुद्दा, अरुणाचल के तवांग क्षेत्र के विवाद जैसे मुद्दे अब भी मौजूद हैं, जो भारत और चीन के बीच विवाद के कारण बने हुए हैं।

भारत और चीन के बीच सीमा विवादों को सुलझाने हेतु कई वार्ताओं का दौर भी जारी रहा है जैसे जुलाई 2017 के जी-20 सम्मेलन (जर्मनी) में दोनों देशों ने शाँतिपूर्वक सम्मेलन में भागीदारी ली।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

इतना ही नहीं जून 2017 में शंघाई सहयोग संगठन में भारत को पूर्ण सदस्य का दर्जा भी दिया गया। इनसे दोनों देश इस मंच का उपयोग आपसी मुद्दों को सुलझाना, क्षेत्रीय सहयोग के बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारत भविष्य में वैश्विक शक्ति बनने की ओर अग्रसर है और चीन की भी महत्वाकांक्षा एक सुपर पावर बनने की है। इसलिए भारत को चीन की महत्वाकांक्षा को समझते हुए अपनी पहचान बनाने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में विश्व में आर्थिक मंदी का दौर चल रहा है क्योंकि चीन की दोहरी चाल पूरे विश्व के देशों के लिए अभिशाप बन गया है जिससे दुनिया के देश चीन से बहुत अधिक नाराज है, भविष्य में पूरे विश्व समुदाय के लिए क्या स्थिति उत्पन्न होगी यह कहना संदेहास्पद है।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष- राजनीति विज्ञान
डी. के. कॉलेज, डुमराँव
दिनांक - 16/05/2020